आपका विचार

विषय-सूची

विनती	...	...	....	७
समाज का कवि से	...	...	...	१०
चन्दनसिंह का समाज से	...	...	...	१२
द्वितीय खण्ड	...	...	...	१७
कुन्दसिंह	...	...	...	१९
नौकर मालिक	...	...	...	२१
तिलोकी के पिता	...	...	...	२९
कुन्दनसिंह	...	...	...	३२
समुवाँ	...	....	....	३३
कवि	...	...	...	३४
कुन्दनसिंह	...	...	...	३६
कवि	...	...	...	३८
देश पर्वत का अन्तर	...	...	...	४२
पर्वतों में धर्म	...	...	...	४७
अकाव-सकाव	...	...	...	४८
जागेरी जत्तरा	...	...	...	५४

1000

कवि चन्दनसिंह मनराल

लेखक

जल थल सब जग हरि जी की माया,
कलमें कागज मजि सुलेख कै दिया ।
ईश्वर भगवान तुमूँ है जया दयाल,
काटी दियो पहाड़क सब दुख जाल ।
भवानी दाहिनो ग्रौर सिद्धि का गणेश,
दयालु ब्रह्मा ग्रौर विष्णु महेश ।
दया तुमूँ करी दियो पर्वतों पर,
तुमरी भक्ति कुला नाम हरी हर ।
इन्द्रा जो समय पर वर्षा बरसाग्रो,
सतसील पर्वतों क ग्रकाव मिटाग्रो ।
भूमियाँ जी तुमूँ हया भूमिका मालिका,
कलियुग मजि हई ग्रवतारा कालिका ।
तुमूँ हैबै ग्रलाचार मैं है गोयू काफी,
पर्वतों बिपत काटो मैं माँगनूँ माफी ।
सूरज भगवान तुमूँ प्रकाश डाग्रो,
सत्सील पर्वतों कैं रसिक बनाग्रो ।
विष्णु ग्रवतार हया ·राम भगवान,
कृष्ण जी पहाड़ हो है गोछा हैरान ।

कृष्ण जी तुमू लै कै पर्वतों पूजा,
पर्वत वासी हैगी हैरान हो आजा ।
हृदय में वैठी जये सरस्वती माई,
बिघ्न कैं टाईला हो गणेश सहाई ।
धन धन महादेव शिव भगवान,
आघिला लेखण मैंकें दिया वरदान ।
धन लक्ष्मी तेरी य माया अपार,
धन सदा नी रहय काकी लेकी घर ।
लक्ष्मी माया मेरी दया करी दिये,
मूर्ख य मन म्यर उज्याला करिये ।
खाली लोभ लालचारे दुनियाँ य मरी,
दुनियाँ में कैलै नीपै महिमा य तेरी ।
तुम सब भाई हूँणी बिनती य मेरी,
घमन्ड नी करण चैन केले बात पारी ।
नी करनी चैनी काकैं बात घमन्ड की,
दुनियाँ में एकनसी नील्है सदा काकी ।
जो कुछ गलती हली माफ करी दिया,
बातों मतलब करणीं दिलम धरिया ।
पढ़नेर पढ़ी लिया धरी वटी ध्यान,
सुण नेर सुणी लिया लगे बटी कान ।

पत लेखी नोट कुनूँ मैं सही लेखनूँ
अल्मोड़ जिल मजि पालि-पछूँ रहनूँ ।
मनराल जात मेरी चन्दनसिंह नौंछा,
पट्टी तल्ला सल्ड माजि दरमोली गौंछा ।
चन्दनसिंह नाम म्यर गुसाँई जी कनी,
गुसाँई गुसाँई कबै भौत पुकारनी ।
समाज कौ बीच बैठी बिचार धरूला,
ध्यान धरी सुणी लिया सब नन ठुला ।
क्वे म्यर बिचार देखी नक हो मानल,
इधर-उधर मेरी बुराई करल ।
उनरी ले फिरी मैंकें नी हतिनी डर,
समाज कैं समझणें हई रे फिकर ।
क्वे म्यर बिचार देखी भल हो मानिला,
किताब कैं पढ़ी सुणीं औरों कैं समझिला ।
भूली गई तिजारत काम ले खेतीक,
सबूँका मनम ध्यान हैगो नौकरीक ।
नौकरी खराफ चीज सब लोग कनी,
भूली जानी सब फिरी नौकरी करनी ।
कसीं छुटी नौकरी लै कनी सब लोग,
फिरीले नौकरी मजि लेई लीनी जोग ।

खेती पैदावरी बात ननों कें सुनानी,
बुजरखों मेहनत बहुत बतानी।
खेती भर बुजरखों समझानीं सुख,
नौकरीक ननों कणीं फ़िरी दिनी दुख।
सब बातें मालूम हो सबूँ कणी हई,
खेती मेहनत अब सब भूली गई।
नौकरीमा हई गोछा अब सबूँ ध्यान,
खेती मेहनत हुणी है गई अज्ञान।
सहायता करो अब बिष्णु भगबान,
खेती की मेहनत मजि लगे दियो ध्यान।

समाज

आओ कवि चन्दनसिंह और हो सुनाओ,
दिल्लिमा नौकरी कैसी सब लेखी जाओ।
तुमूलै नौकरी कैहै सब किस्मकी,
भली भान्ति लेखी दियो नौकरी घरूँकी।
आजकल छौट नन देश नैहै जानी,
क्या तरह काम यूँता दिल्लिमा करनी।
नौकरी का हाल तुम खूब लेखी दिया,
यस बुजरखों कणी समझे हो दिया।

जो हमर बुजरख छौट ननों कणी,
देश मजि भेजी दिनी नौकरी कुहुणी ।
इस्कूल नी पढ़ना ननों कैं आपण,
देश में जो भेजी दिनो कमाई करण ।
तब तुमूँ लेखी दियो नौकरी वरमा,
इस्कूल पढ़े दी जो ननों कैं घरमा ।
और समझाई दियो यस ननों कणी,
जो जानी इस्कूल छोड़ी नौकरी कुहुणी ।
इस्कूल हुँणी भेजा जो यूँ भाजी जानी,
दिल्ली की रटन कणी मनम धरनी ।
दिल्ली की नौकरी हाल लेखी द्यला जब
इस्कूल पढ़णमा ध्यान दिला तब ।
यस सेणीं कणीं तुम और समझाओ,
समझाई खेती सुख याद हो दिलाओ ।
दिल्ली की रटन कणी जो सेणीं सोचनी,
दिल्ली आनूँ दिल्ली आनूँ मालिका हैं कनी ।
दिल्ली जब नी लीगया नी करन काम,
घर बैठी बैकारक करनी बदनाम ।
नौकरी का लेखी दियो अब सब हाल,
देश पहाड़क बीच करी दियो ख्याल ।

देश पहाड़ा अन्तर सब लेखी दिया,
अकाव सकाव किलै सब बतै दिया ।

जागेरी जत्तरा अब बहुत हो हनी,
दुखिया मुन्डिया हम देवता छूँ कनी ।

इन सब बातों करणी अब लेखी जाग्रो,
भुलिया पहाड़ सुख यादम दिलाग्रो ।

चन्दनसिंह

किलै कँछा भल मैंसो मैंहैं ऐसी बात,
कवि नाम पुकारी बै करँछा रजित ।

कभणीक कवि छूँ मैं कभणी लेखक,
समाज कैं समझणी कभणी सेवक ।

नानी छा अकल मेरी नानी हुई बुद्धि,
लेखी दिनूँ मनें बात जो बिचार सुद्धी ।

गलती क्वे हिला जब नक नी मानण,
नानी छा अकल मेरी नान समझण ।

क्या लेखूँ नौकरी हाल क्या लेखनूँ कुछ,
समाज कैं देखी बेर दिल म्यर तुच्छ ।

नौकरी का हाल भया आगिन लेखनूँ,
बुजरखों हुणी मैं य विनती करनूँ ।

ध्यान धरी तुम सब सुणों बुजरक
च्यल लै नी हण चैन अनपढ़ काक ।
ननों करणी पढ़े दिया इस्कूल छैं पास,
नौकरी का यूँ हाल हो तब लेख खास ।
माँ बाप यूँ घर करणी नन दिल्ली भेजा,
हई गोछा कनी च्यला हमुँ करजा ।
माँ बाप यूँ घर करणी नन दिल्ली रैनी,
दिल्ली दुख घर बत्ती कसिका देखनी ।
आपण माँ बापों करणी दया हो नी हई,
छौट नन आपण यूँ दिल्ली भेजी देई ।
दूसरा माँ बाप उती क्या भल मानिला,
छौट ननों हैंती काम दिन रात लीला ।
छौट ननों कमाईलै कर्ज कसी कमा,
इस्कूल पढ़े दिया ननों कैं घरमा ।
इस्कूल पढ़े दिया नों कैं आपण,
पढ़ने पढ़ने फिरी है जानी सयाँण ।
हई गोय च्यल ठुल नी रैनी फिकर,
चाहै ऊ जथें ले जालौ रहलौ निडर ।
नौकरी ले करौ जब काम करौ भल,
मार पीट धौंस लीवे नीडर रहल ।

भौत बात क्या लेखनूँ समझी हो जया,
ननों करणी इस्कूल जरूर पढ़या ।
छोट भाई सुणी लिया तुमूँ कें बतानूँ,
कुन्दनें इस्कूल बात जरा लेखी दिनूँ ।
छोट छी कुन्दन जब बोज्यू मरी गया,
वक पार्जन भार ठुल दद हया ।
भौत भल गुण हया दाज्यू का अन्दर,
बहुत हो दया कनी ऊँ ओकी ऊपर ।
कुन्दना दाज्यू का गुण कां तक लेखनूँ,
दया देरवी कुन्दनें की प्रणाम करनूँ ।
उकणी पढ़णे मजि दाज्यूक छी ध्यान,
कुमति उदिन आई आज छा हैरान ।
आठवीं कलास तक इस्कूल पड़,
दिल्ली वालों ठाट देखि मन चौंकी पड़ ।
आघिन पढ़णें लीजी दाज्यू मन हय,
कुमति उकणी आई नी पढ़न कय ।
दाज्यूला पढ़णें लीजी भौत समझाय,
नी जाले इस्कूल जब मारी द्विला कय ।
बचपन बती कभैं उनुलै नी मारी,
नी पढ़न क्या करण मनम ली ठारी ।

बचपन पत्ती कौंछी दाज्यूक ऊ मान,
इस्कूल पढ़लम कय अपमान।
तब जैसी आज भौत पछतौंण ला रय,
दाज्यू बातों कणी याद करण लै रय।
नकलिया ठाट बाट दिल्ली लौंडू हया,
दिल नी चहकाणों भया इस्कूल पढ़िया।
इस्कूल पढ़ी बत्ती सुख भौत हुँछा,
इलाक या दुनियाँ में महान बनुंछा।
ग्रन्थ बनुछा जब सब समझानूँ,
संशेप में तब जैसी समझाई दिनूँ।
अब जरा लेखी दिनूँ सोणियों का हाल,
दिल्ली की रटन जो यूँ कनी राती व्याल।
दिल्ली की रटन यूँता किलै नी करीला,
क्या काम इनरौ उती बैठिया रहिला।
नौकरीक दुख ओती कुछ नी देखन,
किलैकी नी करी सेणी दिल्ली की रटन।
पति गोय नौकरी पै यूँ छी क्वाटरम,
दुख हय पति पारी दूयुं छा आराम।
नौकरी की सेणी कणी क्या हई खबर,
कस दुख पति पारी कतु छा फिकर।

नौकरी संशेप हाल लेखी दिनूँ आज,
सेंणी कें धरण चेंछा मालिकें की लाज ।
आजकल नी जान जो नौकरी कुहुँणी,
चुल खुच्या मालिक छा किछा ओकी मेणी ।
इधर उधर वक वदनाम करनी,
तब जैसी मालिक हो दिल्ली नै है जानी ।
जो रहनी घर करणीं वड़ा भागवान,
नी जान मालिक दिल्ली नी करण बदनाम ।
पहाड़क समाजक बदली गो ज्ञान,
सहायता करीला हो विष्णु भगवान ।
जंती तती दिल्ली वालों इज्जत करनी,
इस्कूली नन तब दिल चमकानी ।
मक भल कामों नजि इज्जत उनरी,
चाहे कनी दिल्ली मजि ऊँ कैसी नौकरी ।
काकी लै चोलिका जब मङ्गणियाँ आनी,
दिल्लीक सवाल पेस पैली करी दिनी ।
नी देखन खेती पाती नी देखन घर,
नी पूछन लीखी पढ़ी नी देखन बर ।
जवाईं छा दिल्ली जब चेली दिनी देई,
नौकरी दिल्लीमा चाहे जवें कैसीं हई ।
यस ज्ञान हई गोछा अब समाजक,
कौं तक लेखण हया बिचार मनक ।

द्वितीय खण्ड

चन्दनसिंह

तुम सब सुणी लियो य मेरी अरज,
गरीबी लीजिया हई य खास फरज ।
भाई बन्ध तुम सब काम करी लिया,
नौकरी कणक तुम नाम झन लिया ।
आपण इलाका मजि सब काम कण,
परदेशी नौकरीक नाम ले नी लिणा ।
आपण इलाक मजि किया कुलि काम,
इज्जत बनी रहली, नी हलौ बदनाम ।
ह्यौंन हुणो चार माह भावर जै हया,
चार ले महीना तुम उती काटी हया ।
रोजनदारी कुलिकामा तुम करी लिया,
भिड़ पग्याँरुक तुम ठ्यक लेई लिया ।
खेती काम कण मजि लगाणी ताकत,
स्वादिष्ट हय भल रभड़क भात ।
कुलीकाम करीयक पैंस लागों काम,
आपण इलाक मजि बनी रौंछा नाम ।

खेती की मेहनत भया काम बड़े ऐंछा,
सारे य दुनियाँ कणी य खेती पालिछा ।

दोहा

जिसको अकल न होगी कुछ, करेगा नौकरी वह ।
करता हूँ यह काम मैं, लिखता हूँ बात यह ।।

दूकानदारी करि लीणी आपण घरम,
बहुत साधन हनी हमर जिलम ।
हर-चीज ब्यौपार और जड़ फूल पत्ती,
बहुत बेचिनी भया यूं हमर एती ।
जतु कीमतिया चीज देश में बननी,
जड़ बोटी सब चीज पहाड़ा बै आनी ।
नौकरी जो करूँ जब करो पड़ोसमा,
बुलहणों सहल्यता रहीं आपण जिलम ।
सरम नी कणी चैनी कामता कर मा,
पड़ोसमा काम कहूँ नी सोचो दिलम ।
देश जाबै जात हरै हरै जाँछ नाम,
पहाड़क हई जाँछ बुर बदनाम ।
जात हरै नाम हरै पहाड़ी लै कनी,
पहाड़ी पहाड़ी कबै आवाज लगानी ।
नान ठुल सब जब देश मजि जाँछ,
पहाड़क बदनाम तब हई जाँछ ।

क्वे आदिमा मारी जानी क्वे पिटाई खानी,
धौंसता उनरी सब सहन हो कनी।
दिन भरी काम पारी नौकरा थाकनी,
मालिक हो फिरी फिरी धौंस लै जमानी।

दोहा

खेती वारी अच्छी है नौकरी करना है बेकार,
मेहनत करो खेती की नौकरी करना करो इनकार।

कुन्दनसिंह

घर की नौकरी देखी दिल गोय हटी,
यूं बैकारा धौंस कणी सुणी सुणीं बटी।
पोरे बेर मैंता जब गोय दिल्ली हुँणी,
मंगल लै वार हय भेद दक्षिण हुणी।
वाँ जा बटी दिया माँह रहे गोय खाली,
मकणीता उती अब नौकरी नी मिली।
तब बतै एकला हो घरकी नौकरी,
खुहुँणी बनाण और काम लै उपरी।
कपड़ा नी धुण उत्ती नी माजण भना,
नता उती हया छौट उनरा ले नना।
फिर मैंता काम पारी उत्ती लागी गोय,
मुणि मुणि कनै एक महिना है गोय।

मुणि मुणि कनै उनुल सम्भाली भतेरा,
आधुक हो करी दिया गिलास कटोरा ।
फिर मैंकें हई गया दी महिना उती,
मालुम न आधु थाल सम्भाली दी कत्ती ।
ओती फिर हई गया भौत कमभन,
भन माजणाम फिर लागोय कुन्दन ।
मुणि मुणि सारंस दिनूं समझी हो जया,
नौकरीता करूँ हुणि एति झन आया ।
तीन ले महिना पुर उती हई गया,
धौंसता ऊँ ठुल ठुल जमाण भै गया ।
फिर हई गया मैंकें चार ले महीना,
धौंसला बुलाओ कबै सीखे हालीनना ।
दोस्त म्यर एक दिन आई रौछी भ्यार,
उकणी मिलण लीजी मैं हयू तैयार ।
गुस मजि तब कय मांज ले गिलास,
फिर तभी भ्यार जये आदिमाक पास ।
पाँच महिनम म्यर एक दोस्त आय,
त्यर कतु आदिमता आनी कबै कय ।
एक मन यस कय मारी द्यौं थप्पड़,
करी द्यौं टोटमिली यदै दिलै द्यू खबर ।

गिलास नी माँज मेलै आई गोय भ्यारा,
मथ फिर तब गोय बात करी बेरा ।

मथ ले क्या जनूं तब उसारे कुटम,
एक म्यरा लीजिया ऊँ हैरई गुसम ।

चौका मजि जुला कौंछी नी ले जाण दिया,
मैं उनुलै छत मजि भ्यार रोकी दिया ।

एक एक कबै सब उती कें आगई,
मैंहैंतिणी सबुलता बात एक कई ।

मालिक

गिलास कुन्दना तुले किरकी नी माँज,
मुण तेहैं नी जा कय किले गये आज ।

जो कुछ करुला हम तू करले वस,
अरूँका नौकर काम कनी कस कस ।

बजारक काम कनी खुहुँणी बनानी,
सारे ऊँ सफाई कनी बिस्तरा लगानी ।

मालिकों का स्तेदारों काम करी दिनी,
जतू पारी पालिसता नौकर करनीं ।

ननों का कपड़ों कणी ऊँलै धोई दिनी,
ननों कणी इथाँ उथाँ घुमुहूँ ली जानी,

मालिकों कपड़ा सब नौकर ले धूनी,
रात हुग्णी हाथ पांव ऊं लेकी दबानी।
श्रौर खुमामत कनी ऊँनैं मालिकों कि,
छुट्टि ले नी लीना ऊँता बिलकुलै दिनकी।
राती हुग्णी पाँच बजे मे बटी उतरा,
रात हुग्णी काम पारी बाजी जानी वारा।
धौंस ले क्या चीज हुई ऊँता पीटी दिनी,
श्रौरूँका नौकर तब काम ठीक कनी।

कुन्दनसिंह

जो कुछ करग्ण चैंछा सोता करी लियो,
गिलास कटोरी पैली निकाली ले दियो।
मैंता क्या डराग्ण हुँछा मैंतानी डरनूँ,
जो काम सामग्णी श्रालो उ काम करनूँ।
खुहुँग्णी बनाग्ण श्रौर बजारक काम,
तुमूँ हैंती दिया कामो कुल लिहुँ दाम।
प्रेमलै माँजी दिया गिलास कटोरी,
तुमलै करी दी श्राज श्रापग्णी टोटरी।
गिलास कटोरी जब भ्यार नी निकाल,
काम हो कग्णोंकि मैंहैं लियो हड़ताल।

काम पारी हुई गया पाँच ले महीना,
काम हड़ताल करी मैले तीन दिना।
गिलास कटोरी फिर निकालीं ले दिया,
कुन्दनसिंह चौथा दिन काम पै आ गया।

मालिक

आओ आओ कुन्दनसिंह और ले सुनाओ,
चहा हमुल बने हैछा तुमूँ चहा पिओ।
तीन दिन भरी तुमूँ कतु दूर गया,
कती कती घुमी हया क्या क्या देखी हया।
हम सब थाकी गोयू तीन दिन भरी,
कथें गोय कहीं आँछ इन्तजार तेरी।
आई गैछा ठीक हय अब काम करा,
चौक मजि भन अब हई गई पुरा।

कुन्दनसिंह

तीन दिन दुख हय फिरी सुख सुख,
वर्तन पुर हया के नीरय दुख।
हाथ जोड़ी तुमूँ हुणी अरज करनूँ,
आगिनक हाल अब तुमूँ कैं सुनानूँ।
एक दिन दिया दिन हैगी तीन दिन,
भौत लेकी सुख रय एक ले महीना।

फिर लेय, ऐसी वात किछा मालकणी,
कुन्दना नौकर हय कुन्दना हैंतिणी ।

मालकणी

य महिना खर्च एतु ज्यादा क्यक आछा,
दावत नी हई ऐसी य क्या बात हैछा ।
पाँच सेर बिल ज्यादा आई रौछा ग्यौंक,
बिल ले दी सेर ज्यादा आई रौछा घ्यौंक घ्यौंक ।
छटाँक अमचूरा ज्यादा छटांक ले जीरौ,
दीयारती ज्यादा आछा हीड़क ले विलौ ।
पाव ज्यादा अदरख पाव ज्यादा मर्चा,
आधो सेर धनियाँ ले य क्यक खर्चा ।
छटाँक जवाँण हर्दी खर्च हौ ज्यादा,
एतुका खर्चा हय बताई दे फैदा ।
आधो सेर ज्यादा आई गर्म मशाला;
तीन पाव ज्यादा ऐछा उर्दे की दाला ।
सेर ले नमक ज्यादा यों पौंड़ चहाक,
पाँच सेर बिल ज्यादा आई रौ चीनीक ।
सेर भरी ज्यादा ऐछा अरैहरै दाला,
दिया सेर ज्यादा आई मिहींग चावला ।

मूँग की ले दाल तुले कभैं नीं बनाई,
तब जै मसूर फिरी दुवारा य आई।
सावुद यूँ चणा तुले कतुक बनाई,
मकणी य याद नीछ यूँ कतुका आई।

कुन्दनसिंह

अब तुम बीवी मेरी बात सुणी लियो,
खर्च बिलकुले कम मैलै लैकी कयो।

दावत जतुक हई तुम लियो सुणी,
टी पार्टी तुमूले कई पोरूँ होली हुणी।

मैंसता पछपन हई सैंणियाँ पेंसट,
नन ठुल हई सब एक सौ चौंसट।

डेड़ मण पाणी माजि चहा पौंड एक,
पाँच सेर दूध लै बाँदी बड़े टेक।

चहापत्ती भौत कम चीनी की छो कमी,
चहाका केतली दिया मैलै दमादमी।

तीन पौंड चहाकता जरूर चैंहैं छिया,
दूध चीनी बीस सेर जरूर आँछिया।

उदिनता चहा म्यलै खुद ले बनाई,
भ्यारक आदिमा बुल्हे कै लियो ट्राई।

नौकरीता पक्की हई कंलाश भाई की,
दावत करिछा तब मारे पड़ोस की ।
पांच सेर डब आछा उदिन हो घ्योक,
पीसिया उलाय तब बीस सेर ग्योक ।
दस सेर आलू आई पिनाऊ छै सेर,
गोभी की ले लागी गेछी छत मजि ढेर ।
पन्द्रह सेर बेगन ता भुर्ता का आई,
छल्लों हुणी चणा भीगें म्यलै एक थाई ।
पांच सेर जीमीकन्द नौ सेर मट्टर,
बारह सेर लौकी ऐछा उनीस सेर कद्दुर ।
चार सेर मूली ऐछा दी सेर गाजर,
पांच सेर ब्यांज आछा बांकी टिमाटर ।
एतुका सागम चेंछी कतुका मशला,
यूँ तुमरा हाल देखी डाली कमशला ।
पीसिया उलाय कम तुमूं देखी बेर;
एक-एक परांवटी लीगू घन्ट-घन्ट देर ।
ऐसिका उनुला फिरी खाण कम खाई,
एक-एक परांवटी जब देर माजि गई ।
घ्योंकि जरूरत छिया पन्द्रह सेर,
पिसियाता चैंहैं छिया पक्क मन डेड़ ।

बीस सेर त्वौल हून तायरी बनाई;
म्यरता ख्यालम च्याम्रो भौत कम आई।
पाँच सेर धनिया की बनेंछा चटिनी,
अमचूरा मशला लै वचणों की ठानी।
धनियाँ पुदिना म्यर समझी मशला,
ईमिलीता डाई म्यलै अमचूरा बदेला।
चट्टनिमा हरी मर्च डाईछा हो म्यल,
मशला ले जरा डाली हीङ्ग जिरकुल।
कतुका मशला चैंछी एतु चट्टनिमा,
दावतों कैं देखी बेर खर्च हौछा कमा।
तीन दिन भरी रही महिमान सब,
दिया टैम दाल बीबी बनछिया तब।

मालकणी

अब तूता छोड़ी दे हो य झगड़े कणी,
नतर आगिन काम अबेर ले हणी।
आगिनाक काम अब तू कर आपण,
खर्च हौ सब ठीक झगड़ क्या कण।

दोहा कवि

नौकरों में धौंस जमाने की बनी हुई इनकी है आदत
ये बेकार की धौंस समझकर तब लीखी नौकरी आफत

कुन्दनसिंह

मुणि मुणि कनै फिरी दिन हैगी बारा,
ऊ भतेरा लेकी हय मालिक ममुराल ।
उनरा ले उती हय एक ले नौकर,
हमर कुँमाई छिया भाई उ हमर ।
वक मालिकक एक भान्ज छोट छिया,
तिलोकी कें लकड़े ले ओले मारी दिया ।
तिलोकी कें रीस चढ़ी लगे दी थपड़,
छत मजि नैह्या गोय नौं हुणी ऊपर ।
रूनै रूनै भान्ज जब ममें पास गोय,
लाकड़ लीबेर मम तब मथ गोय ।
मैं तहियाँ भतेरा हो लेखूँ हुँछी चिट्ठी,
भ्यार छत मजि ओले तिलोकी दीं पिटी ।
म्यल झट हाथ पारी चिट्ठी फेंकी दिया,
भ्यार हुणी भाज जसे पकड़ी ले दिया ।
ओर छिया मैं दगड़ी तहीं दिया झण,
चिट्ठी ऊँ लिखाण हुँछी आपण आपण ।
उनुला पकड़ीं रौछी बात म्यलै कई,
तिलोकी छोड़ी दी फिरी ज्यान ले बचाई ।
आपण कमरा मजि मालिकन्है गोय,
तिलोकी लै मथ फिरी रुण लागी रय ।

तिलोकी नौकरी छोड़ी फिरी नंह्या गोय,
दूसरा नौकर फिर समुवाँ आगोय।
वेलता नौकरी करी कुल बार दिन;
सोलह रुपयाँ दीछी उकणी महिन।
दस मिनट की राती अणों देर हई,
समुवाँ में करी दिया ओले ले पिटाई।
मुण गली मजि आय उता भाजी बेर,
मालिकें हाथ की एक थप्पड़ खा बेर।

कवि

अगर जब छोटे बच्चों को, हम दिल्ली में न भेजते।
इन बनियों को हाथ की, बेकार की मार क्यों खाते॥
घर वटी तिलोकीक वाप आई गोय,
तिलोकी तनखा लीजी उन्हों हैंती कय।

तिलोकी के पिता

म्यरता चलकी तुम तनखा दी दियो,
जो कुछ कसूर हय माफ करी दियो।
कतुका महिना वैंला काम एती कय,
कतुका रुपया उता खर्च कैं गोय।
कतुका रुपया वैल खर्च कैं रही,
कतुका तुमरी पास अब बची रही।

जो रुपया बची रही दी दियो मकणी,
आज घर ली जानूँ मैं तिलोकी लेकणी ।

मालिक

क्यक ले रुपया यक हमूं पै वसनी,
एकी ले तनखा एक पाई नी बचनी ।
तूलै किलै निकालिछा तनखा जिगर,
हमर भतेरा बत्ती जा नीकल भ्यार ।
प्याला ले पलेटा एला कतुका दी तोड़ी,
गिलास कटोरी ऐला कतुका दी फोड़ी ।
तूता पैली हमर यूँ रुपया दीजये,
आपण चेले कैं लीबे घर फिर जये ।
मुकबत हमर यूँ भनुला नी आण,
यूँ भनुका रुपयाता तुमूला सजण ।
यलै बात सही हई तुमूँ अच्छा ऐती,
तुमूँ कणी ढूं ढूं हुणी हमुं जाँछी कती ।

तिलोकी के पिता

भना लेकी फूटा जब तुमरा काममं,
रुपयाँ ले लेखी दिया तिलोकी नाममं ।
घर हुणी वेला रुपें तब जैनी भेजा,
गलती तिलोकी की ले नी है कुछ आजा ।

तिलोकी तनखा अब पूरी लेई ल्यूला,
याता य जिन्दगी कणी तुमूँ कें दिजुला ।
रुपयाता देई दियो भल ले मुखल,
ऐसी बात नी करन नकल मकल ।

मालिक

भल ले मुखल तूता जल्दी नै जा भ्यार,
मेरी लै हाथ की अब तूता खाले मार ।
य बड़े रुपेनों वाव यादिणी आरौछा,
म्यल हो भतेरा मिहूँ बहस कुहुँछा ।

कवि

नौकरी की छोटे बच्चों को, न होती इतनी शौकीन ।
तिलोकी के पिता क्यों जिन्दगी देने को होते लवलीन ।।
ऊँ वका भतेरा बत्ती भ्याल नैह्या गया,
आपण मनम सोच करण लागया ।
कुन्दनसिंह एतुका हो बात सुणी रया,
रसोई कमरा में बै गलीमा आ गया ।
उनुँकणी गली मजि ऊँलै रोकी गया,
मालिकै की पास फिरी खुद आफी गया ।

कुन्दनसिंह

बाबू जी हो तुम एक बात सुणो मेरी,
च्यलकी तनखा तुमूं दी दियो उनरी।
खून कीं पसीना बने कामता करम,
काम पारी थाकी रौछी तुमरा धरम।
सच्च दिलल काम कौछी बड़े इमानदार,
तनखा नी द्यला जब हली पीट मार।
तुमूला तनखा अब जरूर दी दिणी,
बैंकार की झगड़ हो किलैको ले करणी।
गली मजि बैठी रौछा तिलोकी क बाप,
गलिमा तनखा ऊँकें देई आओ आप।
तिलोकीक बाप फिरी मथ हो बुलाय,
आपण तिलोकी फिरी तनखा ली गोय।

कुन्दनसिंह

तुम सब भाई हुणी विनती करनूँ,
पैलिका समुवाँ हाल आगिन सुनानूँ।
समुवाँता रुनैं रुनैं आई गोय मुण,
चौक मै बै समुवाँक सुणी हारौ रुण।
मुणा गली हुणी देख मथ चौक में बै,
आवाज लगाई तूता किलैं रुँछै कबै।

समुवाँ

पांच मिनट की देर हईगे अणाम,
थपड़ा हो लगे दिया भतेरा जणाम ।

कुन्दनसिंह

झट जाणी मालकणी आईगे चौकम,
गुस बड़े चढ़ी रौछी म्यर ले दिलम ।
बताई दे बी बी जी हो क्या समझी रैंछा,
त्यर भाई नौकरों कैं मारण ला रौछा ।
जरा जब देर हैछी किलै दिया मारी,
त्यर भैला मन मजि क्या बात ल्है ठारी ।
देर मजि आय जब मारी किलै दिया,
गुस जब आई रौछी निकाली नी दिया ।

बीबी

कुन्दनसिंह मेंता रौछी ऊती कणी ठड़ी,
म्यर भैले समुवां कैं बिलकुल नी मारी ।
म्यरा भैला इहिंतिणी ऐसो बात कैंछा,
देर किलै करी आज क्या बात ले हैछा ।
आठ बजे तूता जब से बटी उटले,
तू कतरी जुग फिरी काम लेकी कलै ।

नौ बजे मैं रोज जानूँ दफ्तर हुणी,
तैंयार चहिंछा तहीं खुहुणी मिहुँणी ।
तब एला ऐसी बात उन्हों हैंती करी,
मकणी हो आणा मजि नी हैरई देरी ।
एसीका हो म्यर कैंलै नी हनी नौकरी,
आले नैंह्या जानूँ मैंता काम आनूँ छोड़ी ।
म्यारा भैला उकणी हो बिलकुल नी मारी,
उनूँ कणी देखी बती उता गोय डरी ।

कवि

उनिक मालिक तब उती कैं आगोय,
क्या बात है रैंछा कवै पुछण भे गोय ।
य कहता सारे जब लगाई उकणी,
मुण लेऊ नैंह्या गोय समुवाँ जदिणी ।
बता बे हराम ज्यादा कदिणी मलिछा,
यलै बात झूठी तुलै किरकी करीछा ।
गुस मजि देखी उकैं डर लागी गई,
मकणी नी मारी कबै ओले दिया कई ।

कुन्दनसिंह

मथ आबे गुस हय उता हो मिहुणी,
बहस हो बड़े हैगे उकणी मकणी ।

तनखा लीजिया समुँ व्याव आई गोय,
आवाज हो उ मकणी लगाण भैगोय।
उन्हाँ ले चहाय म्यर ठली लौ गलींमा,
गुस बड़े चढ़ी रौछी म्यर लै दिलम।
मालिछा कबती तूलै साविद ले कण,
तब जै तनखा लीजा मथ तूलै आण।
म्यर ले भरम मिलौ मैं वे साथ हय,
मथ आवे फिरी ओले मारी कबै कय।

कुन्दनसिंह

अब तुम बाबू जी हो सुणों मेरी बात,
जरूर चलाका हैंछा बनिये की जात।
तहीं बती तुम लैता वेसी बात करी,
साविद कराई दिया अब हैकी मारी।
तुमूँकणी विश्वास छी एल झूठी लगेछा,
गुस मजि मेरी साथ बहस करिछा।
आपणाक कसूर हो जो ले देखन,
उहैंतिणी भल मैंस क्वे लेकी नीकन।
कसूरा निकल अब तुमर सौवक,
इकैं जब मारी दिना नी रहन धक।

मालिक

जो घर मिलनी खुहँ लड्डू ले मिठाई,
धौंस लेको उती हली वाँ हली पिटाई ।
दीया घन्ट छुट्टी उकें दिनम मिलिछी,
नीन जब ज्यादा छिया से किलै नी रौछो ।
रहन सहन जाका दगड़ ले हलौ,
कुटमक उकणी उ जरूर समझलौ,
माँ बाप हो बच्चों कणी प्यार भौत कनी,
कसूर ले हई गोय ओंले पीटी दिनी ।

कवि

मारी हुई साविद करने पर मिठी बात कहने लगे
तनखा नहीं देने के लिये कुटम्भ का बतलाने लगे

कुन्दनसिंह

खून कणी पसीना में काम पै वहूला,
बेंकार की धौंस किलै सहन करुला ।
मुकवता तुमुलै हो मिठाई नी दिया,
हमुँ हैंबै दिन रात काम करे लिया ।
एक ले इकन्नी जब बीड़ी पिहुँ दिछा,
अठन्नी की मजदूरी तब करे रीछा ।

जो बभ कैं झलीदार रुपै में ली जानी,
इकन्नी दवन्नी दिबे उ काम करानी ।
कुटमक तुमूँ बाबू कसी समझछा,
नौकर समझी बटी तिलोकी मारौछा ।
कुटम्भक समजना किलकी मारना,
ननोंक झगड़ छिया चुपचाप रहना,
आपण भान्जाक तुमूँ बुर लागी गोय,
बै कसूरा तिलोकी हो मारी किलै गोय ।
तुमूरा सोचण छिया आपण दिलमा,
आपण आगिन बत्ती भानजा रूणाम ।
हमर भान्जा क मारी हमूँ लागो बुर,
कथैंता हुनल यक सैंतणी जरूर ।
तिलोकी समुँवाँ बाप तही एती हना,
तुमरा ऊँ जीजूरूला खून पेई जना ।
मारी दी भानजा कबै बुर तुमूँ करणी,
बिलकुल नी समझा इन् बातों करणी ।
मकणी भरोस नीछ यूं दिला दगड़,
ऐसिका मैं नी बढ़ान आगिन भगड़ ।
नतरता तुमूँ जस कतु देखी रैछी,
तीन सौ हो साठ म्यल भुगुती रहैछी ।

झगड़ा कें छोड़ो अब तनखा दी दियो,
पाई पाई कवतीता हिसाब दी दिये।

कवि

तनखा दे दी फिर उसकी मारे हुए का रहा ख्याल
नौकरों की कर दी मैंने उनके घर में फिर हड़ताल

लेखक

तुमूं सब भाई हुणी बिनती करनूं,
दूसरी बीबी का हाल आगिन सुनानूं।
दूसरी बीबी का तुम सुणी लिया बात,
बैंकार ऐसान धरी तिरिया की जात।
पोरूँ ऊहैं ऐसी बात ऊ बीबी ले करी,
कपड़ा कुन्दना म्यलतिहुँ रही धरी।

बीबी

क्लौथ मील बै ल्यायु तिहुँणी कपड़,
बहुत बढ़िया छैं यूँ देखी ले सकल।
सिलणों लीजिया म्यल टेलयर देई,
सिलाई मजबूत तब इनरी कराई।
आजकल फैसनें की यछा नई काट,
कपड़ों कें पैली बेर बड़े ठाट बाट।

सिलाई कपड़ा म्यल काँग्रेसी फैसन,
दगड़ी हूँ बात कलै हैंसने हैंसने।
एक जोड़ी जौत म्यल तिहुँ धरी रौछा,
बाबू जी ले देई दिये मैंहैंती कैरौछा।
बाबूजी पोरुवाँ ल्याई य जौत कैं मोल,
कीमतक हय यता बड़े जोर सोल।
उनरता खुट्ट करणी य जौत नी आय,
नई तव आज तक भतेरा रहय।
दिल्ली मजि महसूर बाटा छा कम्पनी,
भौत कीमतक ज्वता उती ले मिलनी।
उ वाटा कम्पनीक य ज्वत नई हय,
खुट य काटन हैगो भतेरा रहय।
कुन्दना पैलीरे तूता य जते ले करणी,
कुरत पैजम ज्वौत दी हाछा तैकरणी।
नी ल्युन कीमत इनरि तैंहैतिरणी बती,
एतुका रुपया तूलै ल्याणा कती वती।
कीमत इनरी जब तैंहैंतिरणी लीरणी,
छै महिने तनखा ले पूरी ले नी हरणी।

कुन्दनसिंह

भौत भली बात बीबी तुमला करीछा;
आपरा मनम भली य बात सोचिछा।

राती बती व्याव तक एती कुनूं काम,
कती बती ल्याण मैलै कपड़ों का दाम ।
तुम्रा आपणी घरे इज्जत कै दिया,
अणी जणी सामणी में पैलण लीजिया ।
आपण कुटम कस समझ तुमुरा,
सूँट बूँट तब जसि देई दिया पुरा ।

बीबी

एक बात कुन्दन मैं तैंहैंतिणी कुनूं,
फायदै की बात छा य तकणीं वतानूं ।
बाबूजीं तिहुँणीं जब कुछ बात किला,
उनूं कणीं गुस आलौ धौंस ले जमिला ।
गालीं गुप्ता अन्डीं सन्डीं ऊँ करींला जब,
तू उनर सामणीं में चुप रहे तब ।
गुस मजि तिहुणी ऊँ बात भौत कीला,
तकणी तहियाँ जब मारण उठिला ।
जो कुछ करीला ऊँता तू चुप रहये,
चुपचाप उठि वठि चौकम आ जये ।
जवाब तू उनूँकणी बिलकुल झन दिये,
सूणियाँक अणासुणी तूता करी लिये ।
बाबूजी कैं जबाबक लागू भौत नक,
जबाब नी द्यलै जब झगड़ छा क्यक ।

कुन्दनसिंह

मकणीता चढ़ी गई रीसा बड़े भारी,
यूँ त्यर कपड़ा ज्वता त्यर मुख पारी ।
ह्यू त्यरा टूटिया ज्वत नी धरा ऐसान,
फटिया कपड़ोंक य नई छा फैसन ।
बेकार की धौंस म्यल सहन नी कणी,
याद करी लिये बीबी बतानूँ तकणी ।
दस साला पुरण यूं धोवी का धोईया,
सन ले तारीख हई इनुं पैं लेखीया ।
कमीज फटिया छा य जग ले अठार,
पैजमा मुसका काटी य छा जग वार ।
जंग लागी कमीजक हई रौछा खग,
काटी छिल छिल कैलें पैजम जग जग ।
कभणी बैज्वत जाणी कुण खेती रय,
टूटिया य जत हय द्यौंख लागी गोय ।
आपणी मनम तुलै क्या बात सोचिछा,
देखणी चीजम एतु झूठी ले लगेछा ।
आपण पैंसुका मैंत कपड़ा ली ल्युलां,
तुमरी बेकार धौंस सहन नी कुला ।
आपणी कीमत लगे बड़े हुँछा फैदा,
बदनम फीट हनी फर हनी ज्यादा ।

मुसका काटिया हया बताई नौ काट,
जड़ लागी नौं फैसन बतै ठाट बाट।

कवि

एक बात और मेंत तुमूं कैं बतानूं,
इन सब बातों कणी में सही लेखनूं।
जरा ले के हय जब यूं किस्स पाड़नी,
बानर आदुक स्वाद क्या लेकी ज्यारनी।
सतसील पर्वत देबों रहणियाँ,
यूं आज ओती जीवों कैं वानर बताणियाँ।
देव भूमि जग की हो ऐसी दसतरी,
प्रदेश घरूँकी जो नौकरी ले करी।
हम जीमीदारों रे यूं वाणियाँ सिखाई,
खणों पिणों चीज रीती इनुकैं बताई।
खण पिणों पैलणों की जतु चीज हनी,
सब चीजों कणी पैदा किसान युँ कनी।
ऐस मैंसू कणी भया नी आनी सरम,
जमीदारे चले हैंती बानर करम।

देश पहाड़ का रहन-सहन तथा अन्तर

हाथ जोड़ी तुमूं हुणी विनती करनूं,
जरा सा सारंस एक मैं और लेखनूं।

भौत बात क्या लेखनूँ ग्रन्थ वनुछा,
सारे हाल लेखी बटी इतिहास छपूछा।
धर्मशील जीवोंक हो पर्वत वास,
पापी पखन्डीक हुँछा देश में निवास।

पहाड़ का रहन-सहन चाल-चलन तथा धर्म

भारत में पहाड़ हो सुन्दर छा जग,
अँगूठी बीचम जसे सानदार नग।
नी हुन गर्मी मजि अधिक गर्म,
सर्दी में नी हुन याँ अधिक नर्म।
कैसी सानदार जग पहाड़ बनाय,
गर्मी सर्दी मजि सुख सदा हय।
ढै ढुँगरा इथाँ उथाँ एस हो देखिनी,
वरसात ऋतु मजि हेंसनें रहनी।
ढै ढुँगरों मजि बनी देवी जी थान,
बड़ा बड़ा मन्दिर हो तीर्थ महान।
इधर उधर बती क्या भला देखिनी,
शीशे और सीप तरह सुन्दर चमकनी।
चार चार गाँवों बीच रहनी जंगल,
सब चीज सुख मिलौं करनी मंगल।
इथाँ उथां जाण मजि क्या भल मान्युछा;
चारों रे तरफ जब हरयाली देखींछा।

जाई जस नी माननौ हरयाली में दिल,
ठण्डी हवा हरयाली की शरीर मंगल ।

भौत मीठ सानदार फल फूल हनी,
ज्ञानें ध्यानें बात हमुं भौत समझानी ।

भौत बात क्या लेखनुं समझी हो जया;
समझदारक लीजी ईसाल कै गया ।

हिंसाऊ किलमोड़ बेरु देश मजि हना,
काँफोबा कल्हूँज जो यूँ टीपी ल्यानी नना ।

दस रुपैं सेर जब देशम मिलना,
खाई बती भौत सस्ता इनुकैं बतना ।

सौवा दिवार का डवा हवा खींची ल्यानी,
आपण मधुर गीत हमुँ कैं सूनानी ।

यस कनी मन मजि दुख नी सोचण,
हैंसनें बुलानें भया आपस में ल्हण ।

जीवधारी जीव भया तुमूँ लेकी हया,
मैं तुमर साथी हय मेंझन काटिया ।

हाँजरी बुरुस फूल बहुत सुन्दर,
अफसोच नी करन आपण अन्दर ।

ऊ हर समय भया हैंसनें रहुँछा,
भौत किसमका बात हमुँ कै बताँछा ।

खुशी ले धरिया कनी आपण मनम,
केलें बात पारी कभैं नी कण गुमान ।
खुशी जब हली कनी तुमरी मनम,
चिन्ता कणीं मिटिरा हो भगवान राम ।
ऐसी बात ऊँ फूला हो हमुं कैं बतानी,
ज्ञान ध्यानें बात ऐसी भौत समझानो ।
सतसील पर्वतों ठण्डी हवा हली,
खणियाँ पिणियाँ सब शुद्ध चीज हली ।
जो भाई जथैं ले जानी बेधरक जानी,
सतसील पर्वतों में निर्भय रहनी ।
साफ शुद्ध पर्वत देबो बसनाम,
आज ताहो हमुँ कुहूँ य जग बदनाम ।

देश का रहन-सहन चाल-चलन तथा पापो

सड़िया गड़िया यूँता फल फूल खानी ।
महिनोंक बासी साग यूं लेकी बनानी,
पिहुँणी बहुत गन्ध इनुं मिलूँ पानी ।
कपड़ ले छानी बेर बर्प डारनी,
बर्फ क पानी पीबैं फुन्सी उठनी ।
खाजी कनै बेर फिर बे मौत मरनी,
बर्फक पानी पीवे गव हुँछा मौट ।
बदनता फूली जाँछ यूँ है जानी टौट,

बदन ले भिर हय वाँकी क्या रहय ।
मरनूं मरनूं कवै इनुरा पै कय,
रात दिन यूँता फिर दवाई ले खानी ।
रोज अस्पताल में यूँ सुई लगवानी,
भिर ले बदन हय नी रई ताकत ।
दिमाक ले कम हय नी रही ल्याकत,
भतेरा बे भ्यार यूँता जथाँ हुँणी जानी ।
इनर चारों तरफ काल ले फिरनी,
यूँता जथाँ हुणी जानी मौत रैंछा ठाड़ी ।
कथैं बे मोटर आनी कथैं बती गाड़ी
कथैं बे ट्रक आनी कथैं बे सवारी ।
कथैं वती रीक्स आनी कथैं बती लौरी,
कथैं बती बस आनी कथैं बती ठ्यला ।
साईकिलम बैठी आनी साईकिल वला,
कथैं बत्ती ताँगा आनी कथैं बती कारा ।
टैक्सी कथैं बे आनी कथै सुकोटरा,
बिजुली ट्राम और कथैं ले चलनी ।
हाथ गाड़ी बैल गाड़ी बहुत ले हनी,
मोटर साईकिल जानीं तेज ले बहुत ।
जरा ले रिपट जब यूँ मरा बे मौत,

झल्ली वला बौझ लीबे लागी रैंनी बट
काख हो यूं नी लागन कनी हट हट
रिपट यूं जरा जब वे मौत मरनी
भ्यार जब यूं नी जना सार नी सरनी

कवि—पर्वतों में धर्म

शुरू मजि जै बघत बच्च हुँछा पैदा
माता जी का गर्भ मजि रहुँछा ऊ कैदा
हाथ जोड़ी बिनती ऊ ईश्वरे की कुंछा
निर्भय रहुँ कबे बर ले माँगुछा
जो कुछ खुहुँणी द्यला पाचन करिया
तुमूँ मेरी देह कणी निर्दुखी धरिया
भक्ति जब दस माह गर्भ मजि कई
बालका कैं तीन बर तब दान देई
रुख सुख पची जाण जो कुछ ले खाण
निर्भय बर और तन्दुरस्त रहणा
यूँ लेकी जो तीन बर झूठ पड़ी जानी
हमर कर्त्तव्यों फल हमुँ पै लागनी
पुरण ग्रन्थों की य लेख सही हई
हम अनज्ञानी कणी समझे ऊँ गई
इइँ तीन बात हिला शास्त्र मै लेखी
सतसील पर्वतों में यूँ बात हो देखी

तीन बात देखी बेर तब येस कय
धर्म पहाड़ हय देश पापी हय
शास्त्र गन्थों मजि जो लेख लेखनी
सतशील पर्वतों में धर्म बतानी
सब बात सही कबै देखी लिया आज
मन में बिचारी बेर करि लिया जाँज
महान व्यक्ति जन्मी पहाड़ा जतुका
देश मजि नी जन्म कथैं हो एतुका
महान व्यक्ति जन्मी देश में जो हया
अस्त हणों लीजिया हो पहाड़ा में गया
महसूर तीर्थ ब्रत पहाड़ा में हया
निरवारिश मन्दिरों का शहर बसाया
जो यूं बात म्यलै लेखी सब सही हया
काम मजि लेई लिया अमर है काया
ग्रन्थ बनुछा जब नाम मैं लेखनू,
तब जैसी जरा जरा सारंस बतानूँ ।

अकाल-सकाल

हम लोगों बुजरख कां जांछिया देश,
आपण घरम रैंछी भल कैंछी ऐंस ।
खेती की मेहनत पारी ऊँ लागी रहँछी,
आपण इलाक मजि नाम बनै रैंछी ।

खेती का ऊँ काम पारी लागी रहूँ छिया,
खेतीक कामक तब ढंग ज्याणों छिया ।
कामक टायम पर काम ऊँ कँछिया,
अलावा टायम मजि आराम कंछिया ।
तब ले उनुर फिर भल दिन काट,
आपणी घरम करी भली ठाट बाट ।
दस साल बच्च आज देश नैह्या जाँछ,
क्या काम खेतीक फिर ऊँ लेकी ज्यारुँछा ।
नौकरी की धौंस देखी दान्त हया खटा,
पचास सालम फिरी घर लागा वटा ।
खेती मेहनत फिरी इंता क्या ज्यारनी,
काम करणों उम्ररम यूँ देश रहनी ।
खेती काम करणों फिरीं सार ले आनी,
खेती मजि नी हूँ हूँ लख ख खवै कै दिनी ।
फिर कनी पहाड़ा में पड़ी गो अकाला,
य आपण कसूरा हो नीले देख क्येंला ।
दस साला बटी जब देश नैह्या जानी,
राती बती व्याव तक काम उती कनी ।
यस जब दिन भरी खेती काम कना,
दस साला वै खेतिक यूँ काम पै लागना ।

तब कसी खेती मजि नी हुछिया अन्न,
खेती मेहनत जव मन लगे कन ।
मेहनत भार कणी नी धरनी खेती,
सही कबे देखि लिया आपण हो हेती ।
अन्न खूब पैदा हुन दस साल सकाव,
तव जै के नी विगान दी साल अकाव ।
खेती मेहनत भया यूँ अब नी कना,
तब अब खेती मजि कसी हुँछा अन्ना ।
देश बती छुट्टी आनी यूँ एक महीना,
एक साल मजि हल वाय चार दिना ।
पैन्ट काट पैजम यूँ बनाई ली जानी,
पापलेन लट्ठे की यूं कमीज ली जानी ।
बुकसट पैन्ट पैली बाबू जी वननी,
इस्तिरी प्रेस टूटी काम कसी कनी ।
तुम सब भाई हुणी अरज करनूं,
तुमर सेवक हय तब जै लेखनूं ।
सूँट बूँट खूब पैलो भौत भली वात,
उठाओ खानदान नाम आपणी हो जात ।
पड़ोसियों दुख देखो आपण घरक;
ठाट बाट पारी ल्हौण कर्तव्य च्यड़क ।

ठाट बाट तब हली मेहनत करला,
खेती मेहनत मजि लागिया रहला।
बचपन वती भया बुढापा ले तक,
एकनसी ठाट बाट रहली हो एक।
खेती बड़े चीज हई य दुनिया मजि,
सारे य दुनियाँ करणी पाली हैंछा अजि।
नौकरी में चार दिन सूँट बूँट हया,
आपरण आपरण घर फिर सब गया।
बुढापा में घर जानी पै क्या काम कनी,
खेती काम करू हुणी ताकत नी रैनी।
ताकत नी रही जब पै हल बहानी,
तब सारे पटवा में डन्यरा मारनी।
भिड़पग्यारनी चिणिना नी खनीना वैरा,
जोवा लगणम फिर खाली कनी सैरा।
जोव लगे बेर फिरी डन्यरा छोपनी,
दुनियाँ सरम करणी जोवा ले मिटानी।
इलै नी ज्यारन फिर सी धनावे तार,
दुब मुथै हई जैंछा खेतिमा बहार।
दुब मुथ ऐसी चीज अनाजे लीजिया,
दुष्ट जस जंग हुँछा लुहक लीजिया।

दुब मुथ जड़ भया बहुत फैलनी,
बुढापा ताकत नी है कमिका खननी ।
ताकत नी हई जब काम कमी कनी,
हर काम कण मजि सरम मिटानी ।
तब कसी अन्न छुछा कमिका सकाव,
कसी हमुँ मुख मिलों कैं कटूँ अकाव ।
काम करणें हीमत कैं आफी यूं घटानी-
अकाव अकाव कबै दिलम मोचनो ।
अकावों के बिलकुल दिलम नी ल्याओ,
ताकत लगे वै खेती मेहनत कओ ।
मेहनत कला जब काफी हलौ अन्न,
तब जै क्वे नी निकालो अकाऊ बचन ।
खेती मेहनत हई बहुत अपार,
सारे य दुनियाँ हई खेती का अधार ।
सच्च दिलल जनकले मेहनत कै ज्यादा,
चेली एक खेती में बै ओले कैदी पैदा ।
सतशील धर्मवती चेली ऐसी हई,
अत्याचारी रावण की नाश करी गई ।
बलाज हो तक कैदी खेती में बै पैदा,
मेहनत सिर्फ चैंछा आपणी ले ज्यादा ।